रविवार, दिनाँक 17-03-2024 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल, महाबीर जी दे नाल ओ रघुनाथ जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, प्रेम वैराग साँवले चरणां दा प्यार।

साँवले चरणां दा प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, साँवले चरणां दी प्रीत रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सम सन्तोष सत शास्त्र दा विचार।

सत शास्त्र दा विचार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, शब्द सुरति दा मिलाप रघुनाथ जी दे नाल।

रघुनाथ जी दे नाल, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, सिया राम लक्ष्मण संग होवन बलधार।

संग होवन बलधार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

महाबीर जी तों दासी की कुझ मंगदी, बनिया रहे दासियां दा सत्संग नाल प्यार।

सत्संग नाल प्यार, हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

मैं दासी तुआडे चरणां तों वारी, संगतां लावन मेरे बलधारी।

अंजनी लाल अग्गूं साडी नमस्कार, अग्गूं साडी नमस्कार ।

हुण लग गई लगन महाबीर जी दे नाल।।

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के इस भजन के अंतर्गत परोपकार प्रवृत्ति श्री साजन जी कुल दुनियाँ को सन्देश देते हुए कहते हैं कि हमारी सुरत की लगन तो सजन श्री शहनशाह

हनुमान जी के संग लग गई है। आप भी सजनों, जो जीवन का सत्य है उसको धारण करते हुए धर्म-संगत इस जगत में विचरने के योग्य बनो। इसके आगे वह कहते हैं कि ऐसा योग्य व्यक्ति बनने के लिए आप सब सजनों का सत्संग के साथ अटूट प्रेम बना रहना चाहिये। ऐसा इसलिए क्योंकि सत्य का संग करने से जो आध्यात्मिक प्रेम मन में उत्पन्न होता है, वह उत्तम प्रेम होता है। ऐसे आध्यात्मिक प्रेम में जो सुरत मगन हो जाती है, परमात्मा उस पर प्रसन्न होकर उसे पूरे का पूरा आत्मिक ज्ञान बख़्श देते हैं ताकि वह जीव सम्पूर्णता से आत्मनिर्भर होकर आत्म-विश्वास के साथ निर्भय होकर जगत में विचरने के योग्य बन जाये। आगे जानो कि जिस के पास आत्मिक ज्ञान होता है वह जगत में विचरते हुए भी जगत से सर्वदा आज़ाद बना रहता है। अतः सजनों अगर आप भी जगत से आज़ाद रहकर विचरना चाहते हो और अपने जीवन के कर्त्तव्यों को निष्ठापूर्वक समयबद्ध करना चाहते हो तो आत्मज्ञान प्राप्ति को सर्वोपरि प्राथमिकता दो। इस हेतु अपने ख़्याल को दुनियाँवी नश्वरता से बिल्कुल विलग कर लो और जो आत्मप्रकाश है उसे वहीं ध्यान-स्थित कर लो। जानो यह युक्ति है विधिवत् आत्मिकज्ञान प्राप्त करने की। आत्मज्ञान को प्राप्त करने के पश्चात. आप स्वतन्त्र रूप से हर कार्य करने में स्वयंमेव सक्षम हो सकते हो। फिर किसी के पीछे आपको भागने की जरूरत नहीं। इस संदर्भ में सजनों ज्ञात हो कि जब ईश्वर हमें इस संसार में भेजते हैं तो आत्मिक ज्ञान प्रदान करके भेजते हैं। गर्भ में तो हम इस सत्य को याद रखते हैं और सुरत-शब्द का संग बनाये रखते हैं परन्तु गर्भ से बाहर आते ही यानि अन्दरुनी वृत्ति से बैहरुनी वृत्ति में उलझते ही, भोतिक चकाचौंध में उलझ कर रह जाते हैं। इस प्रकार हम अन्तर्ज्ञान से विमुख हो जाते हैं और अन्तर्ध्यान नहीं हो पाते? अब जिधर ध्यान होगा, वहीं तो दृष्टिगत होगा और उसी पर दृष्टिपात करते हुए हमें उसे ही तो धारण करोगे। कहने का आशय यह है कि इसी कारण हम बाहरी दुनियां में भटक जाते हैं। इस तथ्य के दृष्टिगत ही सजनों कलियुग के इन्सान को सतवस्तु का कुदरती शास्त्र कह रहा है किः-

उल्टे रस्ते ते चढ़यों तूं, औझड़ा दे विच वड़ियों तूं

बलधारी जी दी तूं शरणी आ, ओ रस्ता देवन तेरा उलटा।।

अतः याद रखो अविचार द्वि-देष, मोह-माया, रोने-झुखने से भरा कठिन यानि बर्बादी का रास्ता होता है। हम इस बरबादी से बचे रह सकें इसलिए सजनों कुदरत ने फिर से मेहर

कर हमें सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ बख़्शा और आवाहन दिया कि हे मानव, अपने स्वरूप को ध्याने और पाने का अभी भी मौका है। विडम्बना की बात तो यह है कि हम कुदरत प्रदत्त इस अनमोल साधन को पहचान नहीं पा रहे इसलिए हमारी बुद्धि मनुराज में गिरी पड़ी है और हम बार-बार झंकझोरने पर भी बहरों की तरह कुछ भी धारण करने में असक्षम हुए पड़े हैं। सजनों यह एक बहुत ही दयनीय स्थिति है, अतः अपने ऊपर दया करो। जब अपने ऊपर दया करने को कहते हैं तो इसके अंतर्गत अपनों के संग कुल संसार भी आ जाता है क्योंकि कुल संसार भी तो अपना ही है। अतैव मानो इस अपनेपन के अंतर्गत परिवार, बच्चे व आस-पड़ौस से आरम्भ होकर कुल संसार तक आ जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि एक ही ईश्वर की संतान होने के नाते कुल के साथ व कुल ब्रह्माण्ड के साथ हमारा नाता है। अतः भिन्न होकर मत विचरो क्योंकि यदि हम इसी तरह अलग होकर जीवन यापन करने में व्यस्त रहें तो हम तो कपूतों से भी कपूत हो जाएंगे। अब कहाँ तो परमपिता परमेश्वर का आज्ञाकारी सुपुत्र बनना था और कहाँ हम कुपुत्र जो अपने माता-पिता का, यहाँ तक कि स्वयं अपना कहना भी नहीं मानता, वह ही बन कर रह गए हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो, कुदरत का नियम है कि वह कुछ भी गलत करने से पहले हमें अवश्य रोकती है पर मनुराज में फँसा हुआ बेसुध, बेखबर मानव उसकी बात अनसुनी कर, अपना स्वतः ही नाश कर लेता है। फिर जब विनाश होता है तो मानसिक स्थिति अस्थिरता को प्राप्त हो जाती है। यह अस्थिरता ही है जिसके द्वारा सब तक एक बहुत बड़ा सन्देश यह पहुँचता है कि हे मानव, सावधान हो जा और आत्मज्ञान प्राप्त कर ले वर्ना तीनों तापों से ग्रस्त होकर मारा मारा फिरता रहेगा। तब न तो आध्यात्मिक ज्ञान, न ही आधिभौतिक और न ही आधिदैविक ज्ञान परिपूर्ण होगा। इसी कारण कोई भी आपकी अचेती का लाभ उठा कर यानि बहला-फुसलाकर, अपने पीछे ले जायेगा व हर तरह से आपकी इज्ज़त लूट लेगा। यहाँ भली-भांति जान लो कि आपको लालच देकर आसानी से बहकाया व उलझाया जा सकता है क्योंकि आपके मन में कामना का भाव प्रबलतापूर्वक जाग्रत हो चुका है। कामना के कारण उस के संगी साथी जैसे क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार भी अन्दर उत्पन्न हो चुके हैं जिन्होंने मिलकर हमारे मन की शान्ति भंग कर दी है और मानसिक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न कर दी है। ज्ञात हो कि परिपूर्ण आत्मिक ज्ञान के अभाव के कारण ही हमारा मन अशान्त व चित्त परेशान रहता है। इस विषय में हम तो यही कहेंगे कि चौरासी लाख योनियों के बाद मुश्किल से मिले इस मानव चोले को प्राप्त करके भी

क्यों अपना जीवन बरबाद कर रहे हो? आपके साथ ऐसा न हो इसी हेतु आज आध्यात्मिक क्रान्ति में शामिल होने के लिये सबको बुलाया है। अतः यदि जन्म-मरण से आज़ाद होना चाहते हो तो सारी बातचीत ध्यान से सुनना अन्यथा तो जैसे अभी जन्म-मरण के चक्रव्यूह में यानि चौरासी लाख योनियों में फँसे हुए हो वैसे ही फँसे रहोगे। अब निर्णय आपकी अपनी इच्छा, मर्जी पर निर्भर करता है और कुदरत तो सदा इच्छा अनुसार ही सब कुछ प्रदान करती है। इस संदर्भ में ग्रन्थ पुकार पुकार कर कह रहा हैः-

ओ किस्मत दे बन्दे गल पा लये तूं फन्दे।

ओ गल पा लये क्यों फन्दे हां ओ गल पा लये क्यों फन्दे।।

ओ ओ ओ फन्दे अपने तोड़ जीवन न रोल वे।

किस्मत दा ताला खोल रे, किस्मत दी कुन्जी हेई कोल रे।।

किस्मत दे राहवे जेहड़े संगे पैरां विच पा लये ढंगे।

ओ पैरां विच पा लये ढंगे हां पैरां विच पा लये ढंगे।।

ओ ओ ओ ढंगे दियां गंडां खोल जीवन अनमोल रे।

अब आज यह मौका है अन्यथा फिर रोते हुए मत आना। याद रखो सत्संग के विचारों अनुसार जीवन-पद्धति में ढल कर वैसा ही जीवन जीने से सारी परेशानी समाप्त हो सकती है। ऐसा ही हो इसके लिए अब ध्यान से कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।

एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।

जन्म दी बाजी जित चाहे हार, फिर जीत हार है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

कुदरत ने तैनुं इन्सान बनाया, इस जगत ते तां तूं आया उस ईश्वर दी है करामत।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

माता सजन जी दे गर्भ विच आया, उस ईश्वर ने तेरा अंग अंग सजाया।

सूरज चांद दा डिट्ठा प्रकाश, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।

उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन दौलत चलेगा साथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं।

अकल न कर बरबाद, अकल कर लै तू आज़ाद।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकल है सारा जगजीत मीतां दी ओ है ओ मीत अकल अपनी टिकाणे ला।

फिर तूं उस ईश्वर नूं पा, फिर जीत जीत है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकलवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न, अकल इन्सान नूं करदी है दंग।

अकल वेदों में है विदित, अकल वेदों में है अस्थित।

अकल है तुम्हारे पास, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

शब्दः-

सजनों जे दुनियां वल्लों मुख मोड़ लिया, फिर दुनियां वल मुख करना क्यों।

ऐह दुनियां है जे मुसाफिरख़ाना इस दुनियां वल फिर मुख फेरना क्यों।।

(श्री साजन जी दे मुख दी शाख)

(सुनो मेरे सजनों ईश्वर तुहानुं की कैहंदे हिन)

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।

अपनी अक्ल दे नाल कुल दुनियां नूं जगाओ, कुल दुनियां नूं जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दे नाल, दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दा है प्रकाश, परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

क्या आपने कीर्तन ध्यानपूर्वक सुना है?

'हाँ जी'।

सजनों जिन स्वभावों में अभी तक उलझे हुए हो और अपने यथार्थ से हटकर त्रुटिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे हो उस सब कमज़ोरी को देखते हुए परमेश्वर कहते हैं कि हे जीव ! अभी भी समर्पित हो जा, मैं सब बक्षने को तैयार हूँ। इस हेतु अपने ख़्याल को दुनियाँ से पलटा खवा मुझ संग जोड़ ले, निःसन्देह ऐसा करने पर मैं सब क्षमा कर दूँगा। अतः सजनों मानो कि इस जीवन काल में जो भी हमसे अब तक भूलें हुई, वह दयालु उन्हें क्षमा करने के लिये तैयार हैं और आपकी हार को जीत में परिवर्तित करने में सक्षम हैं। पर यह सब स्वयं के पुरुषार्थ पर निर्भर करता है। इस हेतु निःसंदेह हमें प्रभु की अटल वाणी पर विश्वास करना होगा। आशय यह है कि जो ब्रह्माण्ड के रचनाकार है उन पर विश्वास रखने पर ही हम अपनी यथार्थ अवस्था में आ सकते हैं। अतः इस बात को समझते हुए शास्त्रविहित् उनके अमोलक वचनों की पालना करने के प्रति दृढ़-संकल्प हो अन्तर्मुखी हो जाओ। इस

तरह ख़्याल-ध्यान प्रकाश वल जोड़, आत्मिकज्ञान प्राप्त करो और प्रकाशित हो जाओ। इस संदर्भ में विचार करो कि मैं इस जगत में क्या करने आया हूँ और क्या कर बैठा हूँ। इस विचार उपरान्त जगत से आज़ाद रहते हुए, जगत उद्धार हेतु जो निष्काम भाव से करने आए हो वही करो यानि जगत से कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा मत पैदा करो क्योंकि यह चोरी है जो कामना में प्रवृत्त हो जाती है और हमें स्वार्थी बनाती है। अब स्वार्थवश हम क्या का क्या कर बैठते हैं, वह सब इस कुदरती ग्रन्थ में विदित है। कभी भी सुन सकते हैं, तीनों कालों की बात इसमें वर्णित है जिसे आप सुन सकते हैं। अतः मानो कि आप इन्सानों से चोरी यानि छिपकर तो कुछ कर सकते हो पर जिसने जन्म दिया है उस आद् पुरुष से चोरी नहीं कर सकते क्योंकि वह निराकार, निरंकार होते हुए भी सबके दिलों की जानने वाला है। वही सबके दिलों में स्थित है, शोभित है और केवल वही सजनता का प्रतीक है। इस तथ्य के दृष्टिगत सजनों सजन भाव के वर्त-वर्ताव की महत्ता को समझने की अति आवश्यकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों एक दफा अपने आप को मज़बूत और मजबूर करके आज तक के अपने सारे किये गुनाह माफ करवा लो यानि आत्मेश्वर के आगे पूरा दिल खोलकर रख दो और सत्यता से ख़्याल-ध्यान उधर स्थित कर लो ताकि उसे समझ आ जाए कि अब यह सत्-वादी बनने के प्रति लालायित है। यकीन मानो ऐसा करने से आपको सत्यज्ञान प्राप्त हो जायेगा और अन्दर का बुझा हुआ दीपक पुनः जगमगा उठेगा और ज्योति-स्वरूप हृदय प्रकाशित हो जायेगा। इस तरह अज्ञान-अन्धकार जो माँ-बाप से, संसार से मिला वह सब छँट जायेगा और उसके छँटते ही 'मैं-तूँ'' का सवाल समाप्त हो जायेगा। तब इस बात का आभास हो जायेगा कि 'मैं शरीर नहीं अपितु आत्मा हूँ' और मैं वही दर्शन हूँ जिसके दर्शनार्थ दुनियाँ तरसती है। यहाँ ज्ञात हो कि जब व्यक्ति का बुद्धिबल अज्ञान अवस्था में उलझ जाता है तो उसे अपनी अपूर्णता का अभाव खलता है। यही अभाव उसके ख़्याल को दुनियाँ से

कुछ न कुछ प्राप्त करने के लिए उलझाता है। ऐसा होने पर अन्तर्मुखी से बहिर्मुखी हो जाना हमारी मजबूरी हो जाती है और इतना सुनने के पश्चात, इतना प्रयास करने के पश्चात भी हमारा ख़्याल परिवर्तित ही नहीं हो पाता। अतः सजनों सत्य रूप से ऊपर उठने के लिए प्रयास करो तभी सत्य को जान पाओगे।

इस सन्दर्भ में शास्त्र कह रहा है कि हे मानव ! एक दफा पुरुषार्थ दिखाकर अपना यथार्थ जान जा और फिर देखना कि तूँ सुनिश्चित रूप से सजन बन जायेगा। तब आत्मा में उसी सजन का दर्शन होगा जो तूँ है। इस तरह फिर 'ईश्वर है अपना आप' के विचार अनुसार इस जगत में विचरना सहज हो जाएगा और विश्व का उद्धार व कल्याण करने में सक्षम हो जाओगे। ऐसी अवस्था से यानि जगत कल्याण में रत होने से मन में कोई भी संकल्प-विकल्प नहीं उठेगा। और यदि इसके विपरीत चले तो मन में संकल्प-विकल्प का तांता लग जायेगा जो कि आज हुआ पड़ा है। अतः याद रखो कि आत्मिक ज्ञान द्वारा सब सिद्ध हो सकता है क्योंकि यही ज्ञान हमें रास्ता दिखाता है कि अब ऐसे कर, हाथ को इस प्रकार हिला, यह आहार शुरू कर, इस आहार को त्याग दे क्योंकि इससे शरीर रूपी मशीनरी खराब हो जाती है। इस तरह जीवन का परिणाम अच्छा निकलता है और जीवन में जो भी करते हैं वह सर्वदा अच्छा ही होता है। इस तरह हम अपने पर उपकार करते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाते हैं और हमारा बिगड़ा काम बन जाता है। याद रखो परोपकारी तीनों लोकों में यश-कीर्ति को प्राप्त होता है और ए विध् हकूमत की कुर्सी पर विराजमान हो जाता है। तभी तो सच्चेपातशाह जी को कहा गया है किः-

बस अज त्रिलोकी दा राज असां दे दित्ता, असां बक्ष दित्ती सारी राजधानी।

अज त्रिलोकी दा दे दित्ता ख़िताब सजनों।।

फिर साजन जी हो गये ने राजन और महाराजन सजनों।

फिर कौन बोले ते कौन बोल सके, ते कौन है बोलने वाला।।

सजनों आप भी सच्चेपातशाह जी के नक्शे-कदम पर आगे बढ़ो तो आप भी हकूमत की कुर्सी पर विराजमान हो सकते हो। अब आपको चैत्र के यज्ञ पर आना है। अगर अपने सजन हो जो हमने पहले कहा है, यह काम सभी कर लेना। अब सभी बोलोंगेः-

आध्यात्मिक क्रान्ति....जिन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति....जिन्दाबाद

आध्यात्मिक क्रान्ति....जिन्दाबाद

चलो चलिए .....रल मिल के.... वसुन्धरा चलिए

चलो चलिए .....रल मिल के.... वसुन्धरा चलिए

राम नवमी के यज्ञ उत्ते.....राम नवमी के यज्ञ उत्ते

हाँ यज्ञ उत्ते हाँ यज्ञ उत्ते

चलो चलिए .....रल मिल के.... वसुन्धरा चलिए

सजनों यह तो शुभ अवसर

साल में एक बार आता है

जब महाबीर रघुनाथ जी का

जन्म उत्सव मनाया जाता है

प्रभु तो सब के सांझे हैं

और जन्म में है ही नहीं

नीति पुरुषोत्तम बनने हेतु

हमें वहाँ बुलाया जाता है

इस यज्ञ पर जाने पर ही

मन में प्रेम उछाले मारेगा

और हृदय निर्मल होते ही

यज्ञात्मा विष्णु प्रकट हो जाएंगे

ऐसा अद्‌भुत होने पर

जैसे चलेगा वचन विलास

तो अंतर्पट खुलते ही

नजर आएगा अपना आप

इसलिए सजनों मानो जी

बन जाएगी बिगड़ी बात

प्रभु से बिछुड़ी सुरतों को

मिल जाएगा अटल सुहाग

एक सजनः-सजनों यह सब सुनने के पश्चात् किस-किस के मन में सुनिश्चित रूप से चैत्र के यज्ञ पर आने की व जन्म-जन्मांतरों से बिछुड़ी हुई अपनी सुरतों को उसके अटल सुहाग से मेल कराने के प्रति उमंग व उत्साह पैदा हुआ है?

बताओ बताओ जी सच्चे दिल से विचार करके बताओ जी?

आएंगे, आएंगे हम चैत्र के यज्ञ पर आएंगे

आएंगे, आएंगे हम चैत्र के यज्ञ पर आएंगे

हम तो अपने संग-संग जी औरों को भी लाएंगे

आएंगे, आएंगे हम चैत्र के यज्ञ पर आएंगे

जो सोए पड़े हैं इस तरफ से उनको भी जगाएंगे

ए विध् जाग्रति में ला सबको पर उपकार काम कमाएंगे

आएंगे, आएंगे हम गाते हुए यह आएंगे

क्या ?

इको रूप तुम्हारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा

प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी प्रकाश रिहा जग सारा

इको रूप तुम्हारा इको रूप तुम्हारा

इको रूप तुम्हारा महाराज जी प्रकाश रिहा जग सारा

मन मन्दिर ओही प्रकाशे, जग अन्दर ओही ओ जापे

प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा

इको रूप तुम्हारा इको रूप तुम्हारा

प्रकाश रिहा जग सारा महाराज जी इको रूप तुम्हारा

ध्वनिः- एक निगाह ओ एक दृष्टि ओ एक दृष्टि ओ एक दर्शन

जनचर बनचर जड़ ओ चेतन, ओ एक दर्शन ओ एक दर्शन

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल महाबीर बजरंग बली जी की जय

अब यह निमन्त्रण है। आज का जो आध्यात्मिक क्रान्ति का कार्यक्रम होने वाला है, उस कार्यक्रम को चैत्र के यज्ञ पर आगे बढ़ाया जायेगा। चैत्र के यज्ञ पर हर दिन, हर क्षण महत्त्वपूर्ण होगा। जो भी मानव भौतिकवाद छोड़कर अध्यात्म की ओर बढ़ना चाहता है, उन सब के लिए इस बार का यज्ञ बहुत महत्त्वपूर्ण होने वाला है अतः इसे सुनहरी अवसर मानो और भूल कर भी मत खोवो क्योंकि ऐसा सुअवसर जीवन में बार-बार नहीं आता। इस सुअवसर द्वारा हर मानव को दुराचारिता से उभारकर सदाचारिता का प्रतीक बनाने का पूरा प्रयास किया जायेगा क्योंकि जो कुदरत इन्सान को बनाती है उस कुदरत का परिपूर्ण ज्ञान यज्ञ के द्वारा दिया जायेगा। कुदरत ही जीव को इन्सान रूप में विवेकशक्ति प्रदान करती है ताकि वह मानव चोले में अपना जीवनोद्धार कर सके। उस विवेकशक्ति को आज का इन्सान खो चुका है। इस सन्दर्भ में विवेकशक्ति का खोना दूसरों पर निर्भर होने की बात है। आप आत्म-निर्भर हो सको उसके लिए विवेकशक्ति का हर पहलू आपको समझाया जायेगा। याद रखो सजनों अगर आप इस विवेकशक्ति को ग्रहण करने में सक्षम हो गये तो कदापि सत्य के स्थान पर असत्य को धारण नहीं करोगे। चाहे यह दुनियाँ हजारों यत्न कर ले पर आप डाँवाडौल नहीं होवोगे। विवेकशक्ति के इस्तेमाल द्वारा सत्य धारणा आसान और सहज हो जायेगी। इसके बाद आपको समझना है कि परमात्मा क्या है? सतयुग में किसका साम्राज्य होता है? त्रेता, द्वापर और आज कलियुग में जो साम्राज्य होता है वह इन साम्राज्यों से किस भान्ति अनोखा, इलाही और अभिन्न होता है। सतयुग के साम्राज्य के अंतर्गत तो हर मानव समभाव का प्रतीक होता है। उसकी नज़रों में समभाव होता है और वह समदृष्टि बन उसे प्रत्येक में हर क्षण एकात्मा का दर्शन हो रहा होता है। अतः दो का भाव पनपता ही नहीं।

सजनों इस सन्दर्भ में सोचो कि वह कितना आनन्दमय जीवन होता होगा। सतयुग में स्वस्थता चरम सीमा पर होती है, चाहे वह स्वस्थता तन की हो या फिर मन की हो। अतः तन और मन क्षीण होने का कोई प्रावधान ही नहीं होता। तभी तो आज जो आयु सौ वर्ष तक सीमित है, सतयुग में एक लाख वर्ष तक होती है और इन्सान सदा जवान रहता है। सजनों कितना उत्तम समय आने वाला है। अतः हमें तो अन्दर खुशियों से भर जाना चाहिये। उस कुदरत के वाली का शुक्र करना चाहिये कि हे प्रभु, हम जीवों पर आप कितनी कृपा बरसा रहे हो। कलुकाल के जीवों का उद्धार करने हेतु प्रभु कहते हैं कि मैंने सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भेज दिया है। अब अपने अन्दर से कलुषित विचारों का निकास

कर सद्-विचार धारण करने हेतु आपको इसका अध्ययन तो करना ही होगा। अध्ययन करते हुए चिन्तन-मनन भी करना होगा। तभी आप यथार्थ रूप में मानवता का स्वरूप बन मानवता के प्रतीक बन पाओगे। मानवता के प्रतीक बन गये तो सतयुगी इन्सान बन जाओगे। यह बहुत महान उपलब्धि है। इस उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए तन-मन-धन से तैयार हो जाओ। इस हेतु इस आध्यात्मिक क्रान्ति के अनुसार स्वयं में भाव-स्वाभाविक परिवर्तन लाना आरम्भ कर दो। खुद से आरम्भ करोगे तो खुद को अच्छा लगेगा। तभी दूसरे देखेंगे कि यह इन्सान कैसा था और अब कैसा हो गया। तो उनके अन्दर भी उमंग पैदा होगी। सजनों जब उनके अन्दर उमंग पैदा हो गई तो आप सतवस्तु का प्रसंग चलाने में कामयाब हो जाओगे और आध्यात्मिक क्रान्ति को सफलता प्रदान करने का हेतु बन जाओगे। यह है सुपुत्र होना और सुपुत्र तो परमात्मा को प्यारा होता है क्योंकि वह सम होता है। सुपुत्र परमात्मा से कम नहीं होता, सम यानि बराबर होता है। अतः फर्शों से ऊपर उठकर अरशों को छूने के लिए अब तैयार हो जाओ और फतह पाओ।

आप ऐसे करने में कामयाब हों इन्हीं शुभकामनाओं सहित।